International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-1 January-February-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

भारतीय शिक्षा में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान का इतिहास एवं विकास का संक्षिप्त मूल्यांकन

➢ राजन शर्मा, शोधकर्ता, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
➢ डॉ0 पूनम लता मिड्ढ़ा , (प्रोफेसर), शोध निर्देशिका, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सार :

हमारे देश में ही नही अपितु संसार के अनेक देशों में माध्यमिक शिक्षा बहुधा शिक्षा व्यवस्था की सबसे निर्बल कड़ी रही है। भारत में लगभग 150 वर्षों से अधिक समय से शिक्षा शास्त्रियों द्वारा माध्यमिक शिक्षा की अपूर्णता के सम्बन्ध में चिन्ता की जाती रही है। विभिन्न समितियों और आयोगों के गठन और उनकी संस्तुतियों के क्रियान्वयन की घोषणाओं के बाद भी माध्यमिक शिक्षा गतिहीन एवं अनेक समस्याओं से ग्रस्त रही है। वर्तमान में हो रहे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिवर्ततनों के फलस्वरूप वर्तमान समय की माध्यमिक शिक्षा में गतिशीलता और परिवर्तनशीलता लाना और भी अधिक प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण हो गया है। जिससे बदली हुई परिस्थितियों के साथ भावी नागरिकों को अधिक से अधिक संवेदनशील, उत्तरदायी एवं चरित्रवान बनने हेतु प्रेरित किया जा सके।

प्रस्तावना :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के कार्यान्वयन में भारत सरकार के मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा न0बर, 1989 में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (एन0ओ0एस0) की स्थापना एक स्वायत्त संगठन के रूप में हुई। वास्तव में मुक्त विद्यालय सन् 1978 ई0 में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी0बी0एस0ई0) द्वारा एक परियोजना कार्य के रूप में प्रयोग में लाया गया। अक्टूबर, 1990 में भारत सरकार द्वारा पारित प्रस्ताव के आधार पर 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय' को यह अधिकार दिया गया कि वह स्वयं माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं का संचालन कर सके और स्वयं प्रमाण–पत्र प्रदान कर सके। अंततः सन् 2002 में इसका नाम 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय' के स्थान पर 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान' (एन0आई0ओ0एस0) कर दिया गया और भारत सरकार द्वारा आंशिक रूप से वित्तीय सहायता भी प्राप्त होने लगी। इस संस्थान में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के वे विद्यार्थी विद्या अध्ययन के लिए आते हैं जो किसी भी कारण से अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाते हैं।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान द्वारा प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर तक सामान्य तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं जिनमें विद्यार्थी अपनी सुविधा, आवश्यकता तथा रुचि के अनुरूप प्रवेश लेते हैं। यह शिक्षा व्यवस्था दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था होने के कारण अधिगमकर्ता/शिक्षार्थी/विद्यार्थी अपनी अधिगम गति के अनुसार पाठ्यक्रमों की पढ़ाई कर विषय–वस्तु से सम्बन्धित अपनी समझ विकसित करके परीक्षा में सुविधानुसार सम्मिलित होकर आवश्यक निर्धारित अंक/ग्रेड अर्जित करके प्रमाण–पत्र प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार, इस शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से शिक्षार्थी अंक–पत्र तथा प्रमाण–पत्र प्राप्त करके परम्परागत शिक्षा व्यवस्था द्वारा पढ़ाई किये विद्यार्थियों के समान विभिन्न प्रकार की नौकरियों, आगे की पढ़ाई, पदोन्नति इत्यादि से सम्बन्धित आवेदन करके अपना स्थान सुनिश्चित कर लेते हैं।

दूरस्थ शिक्षा पद्धति में, परम्परागत शिक्षा पद्धति की भांति अध्यापक तथा विद्यार्थियों में अन्तः क्रिया

नहीं हो पाती और न ही शिक्षण–अधिगम का उचित वातावरण (माहौल) बन पाता है, क्योंकि अध्यापक तथा शिक्षार्थी में भौतिक दूरी बनी रहती है इसलिए विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की समस्याओं को सामना करना पड़ता है। इन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होने के कारण विद्यार्थियों में कभी–कभी दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रति विरक्ति सी उत्पन्न हो जाती है। इस विरक्ति को दूर करने के लिए उनकी समस्याओं का समाधान करना आवश्यक हो जाता है। इन विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दूर करने के लिए विद्यार्थियों की कुछ विशेष क्षेत्रों से सम्बन्धित सहायता प्रदान की जाती है जिन्हें छात्र सहायता सेवाएं कहते हैं।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान का मिशन सबके लिए शिक्षा है तथा बालिकाओं और महिलाओं, ग्रामीण युवाओं, कार्यरत पुरुषों एवं महिलाओं, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, विकलांगों और अन्य सुविधावंचित वर्गों को शिक्षित करना ही इसकी विशेष प्राथमिकता है, ऐसे भी बहुत से लोग जो शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हैं, परन्तु नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा सकते उन लोगों को और बेहतर भविष्य निर्माण के लिए यह शिक्षा संस्थान प्रोत्साहन देता है।

इस शिक्षा पद्धति में एक शैक्षिक सत्र में प्रवेश प्रक्रिया दो बार जुलाई और जनवरी माह में होती हैं तथा परीक्षा प्रक्रिया भी दो बार अक्टूबर–न0बर और अप्रैल–मई माह में होती है। इस प्रकार एक विद्यार्थी को एक वर्ष में दो बार प्रवेश लेने और परीक्षा देने का अवसर प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय में प्रारम्भ के समय में सत्र 1990–91 में सम्पूर्ण भारतवर्ष में सात क्षेत्रीय केन्द्रों (दिल्ली, चंडीगढ़, इलाहाबाद, कोलकाता, हैदराबाद, गुवाहाटी एवं पुणे) के अन्तर्गत 161 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के लिए लगभग 40 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। जिसमें माध्यमिक परीक्षा में 21560 विद्यार्थी सम्मिलित हुए और 5050 विद्यार्थी (23ण्4:) उत्तीर्ण होकर प्रमाण–पत्र प्राप्त किये, जबकि उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में 13406 विद्यार्थी सम्मिलित हुए और 3730 विद्यार्थी (27ण्8:) उत्तीर्ण होकर प्रमाण–पत्र प्राप्त किए। इस प्रकार दोनों परीक्षाओं में कुल 8780 छात्र उत्तीर्ण होकर प्रमाण–पत्र प्राप्त किये और यह निरन्तर संस्थान विकास मार्ग पर बढ़ता हुआ सत्र 1992–93 में माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के साथ–साथ व्यावसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर दिया और पहली बार ही 1266 विद्यार्थी व्यावसायिक परीक्षा उत्तीर्ण करके प्रमाण–पत्र प्राप्त किए। सत्र 2003–2004 में लगभग 32100 विद्यार्थियों को व्यावसायिक पाठ्यक्रम में नामांकित किया। जिसमें माध्यमिक शिक्षा में 69896 विद्यार्थी सम्मिलित हुए और 23683 विद्यार्थी (33ण्85:) उत्तीर्ण हुए, उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में 70,385 विद्यार्थी सम्मिलित होकर 20,181 विद्यार्थी (29ण्65:) उत्तीर्ण हुए और साथ ही व्यावसायिक शिक्षा की परीक्षा में भी 11,260 विद्यार्थी उत्तीर्ण होकर प्रमाण–पत्र प्राप्त किए।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान सम्पूर्ण भारत में एक नेटवर्क (संजाल) के द्वारा पाँच विभागों (शैक्षिक, प्रशासनिक, मूल्यांकन, छात्र सहायता सेवा और व्यावसायिक शिक्षा), सात से बढ़कर ग्यारह क्षेत्रीय केन्द्रों (दिल्ली, चंडीगढ़, इलाहाबाद, कोलकाता, हैदराबाद, गुवाहाटी, जयपुर, कोची, भोपाल, पटना एवं पुणे) और 2418 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है। जिसमें 1755 अध्ययन केन्द्र सामान्य शिक्षा एवं 663 अध्ययन केन्द्र व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम के लिए हैं। वर्तमान सत्र 2008–09 में केवल उत्तर प्रदेश में ही कुल 331 प्रत्यायित अध्ययन केन्द्र हैं जिनमें 214 सामान्य पाठ्यक्रम तथा 117 व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अध्ययन केन्द्र है।

विकास एवं प्रगति के इस दौड़ में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान ने गुणात्मक सुधार लाने का भी अथक् प्रयास किया है। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार तकनीकी, ज्ञान के वैश्वीकरण एवं भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में यह संस्थान भविष्य में अपने विद्यार्थियों को ई–अधिगम के द्वारा दूरस्थ शिक्षा के लचीलापन को और भी अधिक लचीला बनाने के प्रयास के साथ प्रारम्भ करने को तत्पर है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा जारी किये गये प्रमाण–पत्रों को भारतीय विश्वविद्यालय संघ, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विभिन्न विश्वविद्यालयों, उच्च शिक्षण संस्थाओं, शिक्षा परिषदों, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय तथा श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने भी मान्यता प्रदान की है। यह संस्थान शैक्षिक, व्यावसायिक एवं जीवन समृद्धि पाठ्यक्रम प्रदान करता है। शैक्षिक पाठ्यक्रमों में सेतु, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम शामिल हैं। शैक्षिक पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं, रूचियों, और क्षमताओं के अनुसार विषयों का चयन करने के लिए स्वतंत्र हैं।

एन0आई0ओ0एस0 का ध्येय (मिशन) : राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान औपचारिक शिक्षा के विकल्प के रूप में उन समस्त विद्यार्थियों को शिक्षित करने का प्रयास कर रहा है जो कि औपचारिक शिक्षा की पहुँच से दूर हैं और इसके साथ ही निम्नलिखित वृहत लक्ष्य की ओर अग्रसर है–

- सभी के लिए शिक्षा
- समाज में न्याय और सौम्यता
- शैक्षिक समाज का विवर्तन

एन0आई0ओ0एस0 का मुख्य उद्देश्य : नियमित रूप से विद्यालय में न पहुँच पाने वाले विद्यार्थियों को दूरस्थ शिक्षा पद्धति के माध्यम से शिक्षित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान को स्थापित किया गया। अतः इसके अग्रलिखित मुख्य उद्देश्य हैं–

- विद्यालय स्तर पर सतत् एवं विकासशील शिक्षा का अवसर प्रदान करना।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को परामर्श सेवाएँ देना।
- दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम सम्बन्धित सूचनाओं के प्रभावशाली प्रसार के लिए एक अभिकरण के रूप में सेवा करना।
- दूरस्थ शिक्षा पद्धति एवं मुक्त विद्यालय में अधिगम के मानकों को चिन्हित करना और प्रोत्साहन देना।

एन0आई0ओ0एस0 की प्रमुख विशेषताएँ :

(1) सीखने की स्वतंत्रता : 'सभी तक सबके लिए' शिक्षा के उद्देश्य के साथ राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान सीखने की स्वतंत्रता के सिद्धांत का पालन करता है, अर्थात् क्या सीखना ह? कब सीखना ह? कैसे सीखना ह? और कैसे मूल्यांकन होना ह? आदि का निर्णय विद्यार्थी स्वयं करते हैं। समय, स्थान और सीखने की गति के लिए कोई बंधन नहीं है।

(2) सहूलियत : एन0आई0ओ0एस0 निम्नलिखित सहूलियत देता है–

अध्ययन योजना– मानदंड को ध्यान में रखते हुए दी गई सूची के अनुसार अपनी पसंद के विषयों का चुनाव कर सकते है।

परीक्षा योजना– सार्वजनिक परीक्षाएँ वर्ष में दो बार आयोजित होती हैं। एक बार नामांकन कराने पर अगले पांच वर्षों तक की वैधता होती है। पांच वर्षो में नौ बार परीक्षा देने के अवसर दिए जाते हैं। इस अवधि के दौरान जब भी आप अच्छी तरह से परीक्षा देने के लिए तैयार हों, तभी परीक्षा दें और इसके अतिरिक्त पास किए गए विषयों के अंकों को एकत्रित करने की भी सुविधा प्राप्त कर सकते हैं।

जब चाहो तब परीक्षा– जब भी आप परीक्षा के लिए तैयार हों आप नई दिल्ली के कैलाश कालोनी स्थित मुख्यालय में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एन0आई0ओ0एस0 की जब चाहे तब परीक्षा (ओड्स) में भी बैठ सकते हैं।

(3) प्रासंगिकता : एन0आई0ओ0एस0 पाठ्यक्रम और कार्यक्रम दिन प्रतिदिन के जीवन में अत्यंत उपयोगी हैं और भावी पढ़ाई के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। एन0आई0ओ0एस0 के सफल विद्यार्थी

आई0आई0टी0, दिल्ली विश्वविद्यालय, जामिया हमदर्द, जामिया मिलिया इस्लामिया, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और बहुत से अन्य प्रसिद्ध और व्यावसायिक संस्थाओं में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

(4) क्रेडिट स्थानांतरण : एन0आई0ओ0एस0 पूर्व ज्ञान को महत्व देता है और इसी के अंतर्गत केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (सी0बी0एस0ई0)/माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश/उत्तरांचल परीक्षा परिषद्/राज्य मुक्त विद्यालयों से उत्तीर्ण किए गए अधिकतम दो विषयों के क्रेडिट स्थानांतरण की अनुमति देता है।

(5) मान्यता प्राप्त गुणात्मक शिक्षा : एन0आई0ओ0एस0 गुणात्मक शिक्षा देने के लिए निरंतर प्रयत्न कर रहा है। भारत सरकार ने इस संस्थान को माध्यमिक स्तर तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सार्वजनिक परीक्षाएँ आयोजित करने और प्रमाण–पत्र देने का अधिकार प्रदान किया है जो कि अन्य बोर्डों के प्रमाण पत्रों के समान है। एन0आई0ओ0एस0 भी सी0बी0एस0ई0 और आई0सी0एस0ई0 के समान एक राष्ट्रीय बोर्ड है।

एन0आई0ओ0एस0 की अन्य विशेषताएँ

आयु सीमा– इस संस्था में प्रवेश के लिए कोई अधिकतम आयु सीमा नहीं है, परन्तु माध्यमिक पाठ्यक्रम में नामांकन के लिए न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम के लिए 15 वर्ष होनी चाहिए।

अध्ययन के माध्यम का चयन– एन0आई0ओ0एस0 में मुख्यतः हिन्दी, अंग्रेजी तथा उर्दू माध्यम में से विद्यार्थी स्वेच्छा से माध्यम का चयन कर सकते हैं। माध्यमिक स्तर पर इनके अतिरिक्त तेलगू, गुजराती, मराठी और मलयालम माध्यम भी उपलब्ध हैं।

विषयों का चयन– विद्यार्थी अपनी आवश्यकता, उच्च शिक्षा हेतु आवश्यक एवं अपनी कठिनाई के अनुसार उन्हीं विषयों का चयन कर सकते हैं, जो एन0आई0ओ0 एस0 की सूची में लिखित हैं।

अतिरिक्त विषय– विद्यार्थी यदि चाहे तो प्रवेश के समय अथवा अध्ययन के दौरान एक अथवा दो अतिरिक्त विषय/विषयों का चयन कर सकते हैं।

निरंतर मूल्यांकन– अपनी पढ़ाई के दौरान अध्यापकों द्वारा मूल्यांकन से विद्यार्थी अपनी कमियों को जानकर सुधार कर सकता है, जो उसके अधिगम में ही नहीं बल्कि सार्वजनिक परीक्षाओं में भी बेहतर अंक लाने के लिए तैयार और सहयोग करता है।

पंजीकरण की वैधता– इसमें एक बार पंजीकरण कराने पर पांच वर्षों तक की वैधता होती है। माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सार्वजनिक परीक्षा में पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए अधिकतम 9 बार या उससे कम अवसर ले सकतें हैं। इससे अधिक अवसर लेने हेतु पांच वर्ष बाद पुनः पंजीकरण कराना पड़ता है।

आंशिक प्रवेश– इस योजना के अन्तर्गत विद्यार्थी एक या एक से अधिक विषयों में प्रवेश ले सकते हैं। उत्तीर्ण होने पर उन्हें केवल अंक विवरण ही दिया जाता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा की वर्तमान स्थिति :

एनआईओएस के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में नामांकित 15 लाख शिक्षार्थियो से जुड़ हुए है। आप विश्व की विशालम मुक्त शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बन गए है। एनआईओएस को विद्यार्थियों के पंजीकरण करने,परीक्षा आयोजित करने ओर सफल विद्यार्थियों को पूर्व स्नातक स्तर तक प्रमाण पत्र प्रदान करने का अधिकार है। यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थी केंद्रित गुणात्मक विद्यालयी शिक्षा, कौशाल निर्माण और प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसके पाठ्क्रमों का संचालन

मुद्रित सामग्री के साथ–साथ प्रत्यक्ष विचार–ठिर्श (व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों), प्रयोगशालाओं में प्रयोग/प्रशिक्षण, श्रव्य–दृश्य कैसेट तथा रेडियों प्रसारण आदि के द्वारा किया जाता है।

एनआईओएस का यह प्रयास है कि शिक्षार्थियों को उनके रहने अथवा कार्य करने के निकटतम स्थान पर शिक्षा दी जाए और आपकी आवश्यकताओं और रूचि के तदनुरूप हो। यह समय,स्थान ओर सुविधानुसार रूचिपूर्ण विषय चुनने की स्वतंत्रता देता है। हम एनआईओएस में शिक्षार्थियों की शिक्षा में नये परिवर्तनों लाने और सुधार करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे है। दूसरे कार्यो के साथ एनआईओएस ने एआई के माध्यम से प्रवेश की पूर्व प्रक्रिया के अलावा आनॅ लाइन प्रवेश की शुरूआत की। माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर जब चाहो तब परीक्षा की व्यवस्था की गई है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ओड्स की सुविध गणित, भौतिकी, व्यवसाय अध्ययन, हिन्दी, राजनीति विज्ञान तथा गृह विज्ञान में दी गई।

एन0आई0ओ0एस0 ने अध्यापकों, संयोजकों, सुगमकर्ताओं (फेसिलिटेट्र्स) को प्रशिक्षित करने तथा अधिगमकर्ताओं के साथ सीधी अंतःक्रिया हेतु टेली कांफ्रेंसिंग कार्यक्रम को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के साथ मिलकर प्रारम्भ किया है। इग्नू अपनी चित्रशाला (स्टूडियो) उपलब्ध कराता है तथा भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन (इसरो) इसको उपग्रह से जोड़कर एक मार्गी वीडियो तथा द्वि–मार्गी ऑडियो कार्यक्रम को शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए सम्भव बना रहा है। एन0आई0ओ0एस0 50,000 विद्यार्थियों, 800 संयोजकों, 800 सुगमकर्ताओं और 200 से अधिक अध्यापकों को दूरस्थ शिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर अंतःक्रिया कराने के योग्य हो चुका है।

एन.आई.ओ.एस. की अध्ययन प्रक्रिया :

दूरस्थ शिक्षा के शिक्षार्थियों के पास परम्परागत शिक्षण पद्धति के समान न तो कक्षा शिक्षण होता है और न ही अध्यापक, जो शिक्षण अधिगम का वातावरण बनाने में सक्षम होते हैं। शिक्षण अधिगम वातावरण की अनुपस्थिति में स्व अधिगम मुद्रित सामग्री, अधिन्यास, श्रव्य–दृश्य कार्यक्रम, टेली कांफ्रेंसिंग, परामर्श, अंशकालिक शिक्षण इत्यादि इसका स्थान ग्रहण करते हैं। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान अपने विद्यार्थियों को उनसे सम्बन्धित पाठ्क्रमों को भली–भांति समझने तथा समझाने के लिए विविध शिक्षा पद्धतियों का प्रयोग करता है जो निम्न माध्यमों से प्रदान किए जाते हैं।

स्वअध्ययन मुद्रित सामग्री : राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान अपने विद्यार्थियों को ऐसी मुद्रित पाठ्य सामाग्री प्रदान करता है जिसका स्वयं अध्ययन करके ही विद्यार्थी उसके विषय–वस्तु को अच्छी तरह समझ सकता है। उसे विद्यालयी शिक्षक को पढ़ाने या समझाने की आवश्यकता नहीं रह जाती, क्योंकि ये पुस्तकें, सामान्य पाठ्य पुस्तकों से भिन्न रहती हैं।

ऑडियो और विडियो कायर्क्रम : राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान शैक्षणिक तथा सामान्य प्रक्रियाओं पर विभिन्न प्रकार के ऑडियो तथा विडियो कार्यक्रम को तैयार करता है। इन कार्यक्रमों को अध्ययन केन्द्रों पर विद्यार्थियों को देखने एवं सुनने की व्यवस्था होती है, अवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थी इन कैसेटों या सीडी प्लेटों को अपने घर खरीदकर या उधार मांगकर (ऋण) ले जा सकते हैं।

व्यक्तिगत संपर्क शिक्षण कार्यक्रम : राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के अध्ययन केन्द्रों तथा क्षेत्रीय संस्थाओं पर व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम चलाया जाता है। इसके अन्तर्गत विषयगत सभी समस्याओं का समाधान तथा परामर्श का प्रावधान है जो अध्ययन केन्द्रों तथा क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा संचालित किया जाता है। प्रयोगात्मक कार्यों के लिए प्रयोगशाला तथा सैद्धांतिक शिक्षा हेतु अध्ययन कक्ष का प्रबन्ध अध्ययन केन्द्रों द्वारा किया जाता है। अध्ययन केन्द्रों को प्रत्यायित संस्था के नाम से भी जाता जाता है।

अनुशिक्षक अंकित मुल्यांकन कार्य : अध्ययन के दौरान अपनी प्रगति की जाँच के लिए अनुशिक्षक अंकित मूल्यांकन कार्य (टीएमए) अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रक्रिया में प्रत्येक विषय के विद्यार्थियों हेतु किए

गये मूल्यांकन कार्य के उपरान्त, शिक्षक द्वारा मूल्यांकन कार्यो में सुधार करके उसमें संशोधन और सुझावों के साथ विद्यार्थियों को उपलब्ध करा दिया जाता है। माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रमों में टीएमए के अंक ग्रेड में दिए जाते हैं। यद्यपि ये अंक सार्वजनिक परीक्षा में जोड़े नहीं जाते लेकिन प्रत्येक विषय से सबसे अच्छे दो टीएमए को विद्यार्थियों की अंक–तालिका में दर्शाया जाता है। विद्यार्थी द्वारा यह कार्य सम्पादित न करने पर उसकी अंक तालिका में 'अनुपस्थित' लिख दिया जाता है। इस प्रकार इससे विद्यार्थी को प्रश्नोत्तर लिखने का अभ्यास, संशोधन, मार्गदर्शन तथा मूल्याकंन द्वारा विद्यार्थी के प्रगति की जाँच होती है।

प्रवेश प्रक्रिया :

प्रवेश के लिए निम्नलिखित दो तरीके है :

(क) एनआईओएस की प्रत्यायित संस्थाओ ंके माध्यम से प्रवेश होता है। जिन्हें सामान्य तौर पर अध्ययन केन्द्र कहा जाता है। यह सभी के लिए खुला है। चूँकि सीमित संख्या में अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से प्रवेश लिया जाता है। इसलिए 'पहले आओं पहले पाओ' के आधार पर प्रवेश लिए जाते है जो कि एनआईओएस द्वारा एआई को आबंटित स्थान की उपलब्धता पर निर्भर करता है। एनआईओएस की ऑन लाइन (परियोजना नी ऑन) के माध्यम से ऑन लाइन प्रवेश भी होता है।

(ख) एआई के माध्यम से प्रवेंश की प्रक्रिया : राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, तथा आस–पास के उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के जिले, जिनमें शामिल है। गौतम बुद्ध नगर (नोएडा तथा ग्रेटर नोएडा) , गजियाबाद, गुड़गाँव, फरीदाबाद तथा झज्जर को छोड़कर भारत के सभी राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में प्रकार–1 के विद्यार्थियों के प्रवेश की सीटों का विभाजन 60 प्रतिशत तथा 40 प्रतिशत के रूप में होता है। भारत के सभी राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में विद्यार्थियों के प्रवेश की 60 प्रतिशत सीटे अध्ययन केन्द्रों द्वारा परंपरागत तरीके से भरी जाती है तथा प्रकार–1 में 40 प्रतिशत सीटें ऑन लाइन के माध्यम से 'पहले आओं पहले पाओं' के आधार पर विद्यार्थियों द्वारा भरी जाती है।

- वे सभी विद्यार्थी जो अध्ययन केन्द्रों को आबंटित 60: सीटों के भरे जाने के कारण प्रवेश नहीं ले पा रहे हो वे ऑन लाइन के माध्यम से प्रवेश ले सकते है।
- प्रवेश के लिए एनआईओएस की ही किसी प्रत्यायित संस्था (एआई) के माध्यम से विवरणिका के अंत में दिए गए निर्धारित आवेदन पत्र में ही आवेदन कर सकते है।
- अपने पसंदीदा एआई पर निर्धारित शुल्क के साथ पूरी तरह से भरे हुए आवेदन पत्र संबंधित कागजातों व निर्धारित शुल्क सहित जल्द से जल्द जमा कर के प्रवेश पा सकते है। क्योंकि एआई में सीमित संख्या में स्थान है।

एनआईओएस की ऑन लाइन परियोजन (एनआई–ऑन) के माध्यम से ऑन लाइन प्रवेश एनआईओएस ने ऑन लाइन प्रवेश की शुरूआत की है ताकि विद्यार्थी स्वयं प्रवेश लेने में सक्षम हो सकें। ऑन लाइन प्रवेश चार प्रकार के होते है, जो कि विभिन्न आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए सहायक होते है। इन चार प्रकारों में एक दूसरे से अलग–अलग होगें अर्थात् विद्यार्थी इनमें से किसी एक का चयन कर सकता है।

सभी विद्यार्थियों के लिए ऑन लाइन प्रवेश (प्रकार–1) : सभी विद्यार्थियों के लिए इस विशेष प्रकार के ऑन लाइन प्रवेश माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक के लिए निर्धारित योग्यता आधार के अनुसार होते है। ऐसे विद्यार्थियों पहली बार अप्रैल–माई परीक्षा में शामिल हो सकते है। क्रेडिट स्थानांतरण की योजना एआई द्वारा प्रवेश वाले मामले की भांति ही होती है। उन विद्यार्थियों के लिए ऑन लाइन प्रवेश जो अक्टूबर –नवंबर परीक्षा में बैठना चाहते है (प्रकार–2) : यह ऑन लाइन प्रवेश मात्र 20 दिनों के लिए खुला रहता है। यह उन विद्यार्थियों के लिए है जो किसी भी मान्यता प्राप्त परीक्षा बोर्ड से माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा

में बैठे किन्तु सार्वजनिक परीक्षा में उत्तीर्ण नही हो सके। इसके अतंर्गत शामिल होने वाले विद्यार्थी संबंधित बोर्ड की अंकतालिका/प्रवेश पत्र के आधार पर एनआईओएस की अक्तूबर/नवबंर की माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में बैठ सकते है।

ऑन लाइन प्रवेश उन विद्यार्थियों के लिए जो माध्यमिक स्तर पर जब चाहो तब परीक्षा (ओड्स) में बैठना चाहते है (प्रकार–3) : इसके अतंर्गत ऑन लाइन प्रवेश उन विद्यार्थियों के लिए पूरे वर्ष खुला रहता है। जिन्होने किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की है और अपनी योग्यता को एक अथवा अधिकतम चार विषयों में प्रवेश लेकर बढ़ाना चाहते हैं अथवा ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने किसी भी मान्यता प्राप्त परीक्षा बोर्ड से परीक्षा दी परन्तु उत्तीर्ण नहीं हो सके और एनआईओएस की जब चाहे तब परीक्षा प्रणाली से माध्यमिक परीक्षा में शामिल होना चाहते है। इसके अधीन ओड्स में स्थान की उपलब्धता के आधार पर प्रवेश मिलता है। वर्तमान में ओड्स का संचालन एनआईओएस के नोएडा स्थित मुख्यालय में किया जा रहा है जहाँ सप्ताह में तीन बार प्रतिदिन 130 विद्यार्थियों को परीक्षा में बैठने का मौका मिलता है।

ऑन लाइन प्रवेश ऐसे विद्यार्थियों के लिए जो उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एनआईओएस की ओड्स प्रणाली में बैठना चाहते हैं (प्रकार 4) : इसके अंतर्गत ऑन लाइन प्रवेश उन विद्यार्थियों के लिए पूरे वर्ष खुला है जो किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड/विश्वविद्यालय से उच्चतर माध्यमिक अथवा उच्च परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके है और एक अथवा अधिकतम चार विषयों में प्रवेश लेकर अपनी योग्यता को बढ़ाना चाहते है और जिन्होनें किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण अवश्य की हो अथवा ऐसे विद्यार्थी जिन्होनें किसी भी मान्यता प्राप्त परीक्षा बोर्ड से उत्तर माध्यमिक स्तर से परीक्षा दी परन्तु उत्तीर्ण नहीं हो सके और वे उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एनआईओएस की जब चाहो तब परीक्षा में बैठना चाहते है। ऐसे विद्यार्थियों की किसी भी मान्यताप्राप्त बोर्ड से माध्यमिक कक्षा (दसवीं) उत्तीर्ण होनी चाहिए। ऐसे विद्यार्थी को प्रवेश की पुष्टि के लिए बोर्ड द्वारा जारी मूल अनुत्तीर्ण/उत्तीर्ण अंकसूची भी अपने आवेदन फॉर्म के साथ जमा करनी होगी। यह योजना इस समय केवल छह विषयों के लिए ही वैध है, वे है : गणित, भैतिकी, व्यवसाय अध्ययन, हिन्दी, राजनीति विज्ञान और गृह विज्ञान। यह योजना नोएडा स्थित एनआईओएस मुख्यालय में जब चाहो तब परीक्षा के माध्यम से उपलब्ध है।

निष्कर्ष–

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान न केवल भरत का अपितु पूरे विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षा प्रणाली है। वर्तमान सत्र 2008–09 के लिए पूरे देश में 11 क्षेत्रीय केन्द्रों सहित लगभग 1600 अध्ययन केन्द्रों के संजाल में फैला हैं जिसमें 1228 सामान्य पाठ्यक्रम व लगभग 350 व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अध्ययन केन्द्र हैं जबकि केवल उत्तर प्रदेश में लगभग 400 से अधिक अध्ययन केन्द्र हैं। 1990 से 2008 तक लाखों विद्यार्थियों ने नामांकन कराया तथा पाठ्यक्रम पूरा करके प्रणाम–पत्र भी प्राप्त किये। इस प्रकार देखा जाये तो विश्व में शिक्षा से वंचित लोगों के समूह का एक बड़ा हिस्सा इस शिक्षा पद्धति से लाभाविन्त हुए और आगे भी होते रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- **कौशल, एस० (2002).** फन्क्सनिंग ऑफ डिस्टेंस एजूकेशन इन्स्टीट्यूशन्स इन देलही. अनपब्लिश्ड डॉक्टरल थेसिस, डिपार्टमेंट ऑफ एजूकेशन, यूर्निवर्सिटी ऑफ देलही, देलहीं
- **मुछाल, एम0के0 (2000).** राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के दूरस्थ शिक्षण अधिगम उपगमों की उपयुक्ता का अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 19 अंक 2।
- **मुछाल, महेश कुमार (2001).** राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की कक्षा 10 के स्तर पर सामान्य विज्ञान एवं

सामाजिक विज्ञान में अनुदेशन व्यूह रचनाओं की उपलब्धि के सन्दर्भ में प्रभाविकता. अप्रकाशित पी–एच०डी० शिक्षा शोध ग्रन्थ, शिक्षा संस्थान, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर.

- **सिंह, मंजुषा (1995).** औपचारिक एवं दूरस्थ माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बंधी आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि : एक तुलनात्मक अध्ययन, एम0एड0 लघु शोध ग्रन्थ, दयाल बाग शिक्षण संस्थान, आगरा
- **पाल एवं निगम (2000),** सामान्य, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के दृष्टिहीन विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 18, अंक 3।
- **राजकुमार (1999),** 'विभिन्न विद्यालयी पाठ्य चर्चाओं में उपलब्धि और अध्ययन आदतों के बीच सहसम्बन्ध का अध्ययन, 'इण्डियन जर्नल ऑफ सायकोमेट्री इन एजुकेशन, वॉल्यूम–30, अंक–1, पृष्ठ–53–56
- **ज्ञानानी, टी0 एस0 एवं गुप्ता, मधु (1996).** शिक्षित पीढ़ी, जाति एवं यौन भिन्नता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 14, अंक 1
- **त्यागी, अंजू (1994),** 'स्वधारणा के सन्दर्भ में छात्र छात्राओं की शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन,' एम0एड0 डिजर्टेशन, जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान वॉल्यूम–3
- **शर्मा सन्तोष (2000).** माध्यमिक स्तर पर सूचना एवं संचार तकनीकी, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 19, अंक 2।
- **शर्मा लालशा एवं वर्मा (2000).** शरत उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0,नईदिल्ली,वर्ष 19, अंक 2।
- **शर्मा, धीरेन्द्र कुमार (1999).** अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकाक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 14, अंक 11।